नारियल

लेखक परिचय :

विद्यानिवास मिश्र

प्रख्यात निबंधकार और मनीषी विचारक विद्यानिवास मिश्र के निबन्ध हिन्दी ललित साहित्य के निबंधों में अद्वितीय उपलब्धि है। आपका जन्म सन् 1926 में गोरखपुर उत्तरप्रदेश में हुआ। आप हिन्दी और संस्कृत के विशिष्ट विद्वान और विचारक के रूप में विख्यात हैं।

साहित्य अकादमी, कालिदास अकादमी, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आदि अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध रह कर आपने हिन्दी साहित्य की सेवा की है। क.मा. मुंशी भाषा विज्ञान संस्थान, आगरा के निदेशक, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय एवं काशी विद्यापीठ वाराणसी के उपकुलपति तथा नवभारत टाईम्स के प्रधान सम्पादक पद पर रहते हुए इन्हें पद्मभूषण उपाधि से अलंकृत किया गया।

मार्डन हिन्दी पोएट्री, इण्डियन पोयटिक टेडीशन राधा-माधव रंगरंगी, महाभारत का यथार्थ, भारतीय भाषादर्शन की पीठिका, व्यक्ति व्यंजना आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

आपने साहित्य अमृत पत्रिका का सम्पादन भी किया है। इनके व्यक्तिपरक निबन्धों में लालित्य अनुभूति के साथ लोक की भाषा और अनुभव ताप है। वहीं समाज से वृहत्तर और व्यापक इकाई लोक की महिमा और गरिमा की जीवन्त अभिव्यक्ति होती है। व्यक्तिपरक लालित्य निबन्ध के क्षेत्र में आपकी छवि अद्वितीय है।

नारियल ऊपर से अत्यंत कठोर किन्तु भीतर से एकदम सरस और मधुर होता है। लेखक के अनुसार कर्त्तव्य-परायण व्यक्ति भी नारियल जैसा हुआ करता है। वह कर्त्तव्य-पालन में दृढ़ तथा कठोर अवश्य होता है किन्तु उसके कार्य कल्याणकारी होते हैं। इसीलिए मांगलिक कार्यों में नारियल को विशेष महत्त्व दिया गया है। चारुता के लिए मृदु और कठोर दोनों संतुलन चाहिए। मंजुता के लिए ताप और शीत का। पिता नारियल की भाँति ही रहे। ऊपर से संयत कठोर और भीतर से आर्द्र रस रंग से अपूरित पिता के प्यार से मस्तक दमकता है। पिता को नारियल से जोड़ने के पीछे एक गहरी लोक चेतना है जो अनुशासन को महत्व देती है और अनुशासन वात्सल्य को। अनुशासन में भीतर रस की उत्कंठता से दूसरों को सुख देने की कामना भरी है। इसी से जीवन की पूर्णता है इसी से सांस्कृतिक जीवन में नारियल का महत्त्व है।

बचपन में बड़ा कौतूहल होता था मन में कि वह सूखी-सूखी विरूप-सी क्या वस्तु है, होम हो तो, कथा हो तो, विवाह हो तो, पूजा हो तो, ज़रूर मँगायी जाती है। तब हरा नारियल नहीं देखा था। उत्तर भारत के जिस इलाके में मेरा जन्म हुआ था, वहाँ नारियल के पेड़ नहीं थे। बस, किसी अनुष्ठान के मांगलिक द्रव्यों की सूची बनती थी, तब नारियल उसमें अवश्य लिखा जाता था और तब इसकी सार्थकता, विशेष समझ में नहीं आती थी। कुछ बड़ा हुआ तो विवाह के अवसर पर कानों में एक गीत पड़ा :

खाउ पियउ धना नरियर, बिलसउ धना सेनुर।

यह नववधू को आशीष दी गयी है कि हे धन्या, हे अपने प्रिय की प्रिया! तुम नारियल खाओ, पीओ, नारियल के फल सरीखे ऊपर से कठोर और भीतर से सरस जीवन का उपभोग करो। तुम सिन्दूर का सौभाग्य, अनुराग के रंग का सौभाग्य बिलसो। उस समय मैं कुछ अचकचाया कि नारियल खाने-पीने के लिए क्यों कहा जा रहा है, यह कौन-सा अमृत फल है, इसमें कौन-सी विशेषता है? उत्तर मुझे बहुत बाद में मिला। मेरे एक मित्र उद्यान-विज्ञानी हैं, उन्होंने बतलाया, नारियल उष्ण कटिबन्ध का एकदम अपना वृक्ष है, इसका सिर आग में रहता है और पैर जल में। जड़ें रस में निरन्तर सिक्त रहती हैं। शरीर विशेष रूप से सिर निरन्तर सीधी कड़ी धूप में उत्तप्त होता रहता है। यह सिंचन, यह तपन दोनों मिलकर ही तो

जीवन है। ताप और रस का एकत्र संयोग ही तो जीवन का वास्तविक भोग है।

कुछ और समय बीता। भारवि के काव्य की प्रशंसा में मल्लिनाथ की एक उक्ति पढ़ी कि भारवि की अर्थगम्भीर वाणी नारियल के फल की तरह ऊपर से कठोर और भीतर एकदम रसपूर्ण है। उसी के आसपास भारवि के प्रदेश में जाना हुआ। पल्लवों के ऐश्वर्य की छाँह में तमिलनाडु में नारियल की पंक्ति से मण्डित भारत की तटरेखा देखने को मिली, कच्चे नारियल का दूध पीने को मिला। तपती दोपहरी में उस दूध का स्वाद विलक्षण लगा और यह मर्म खुला कि मंगल या मांगलिक होने का अभिप्राय मधुर होना तो है ही पर यह नहीं है कि इसमें वह कठोरता न हो, जो ताप सह सके जो इसमें अनेक प्रकार की कुत्सित दृष्टियों को झेलने के लिए अभेद्य कवच न हो, साथ ही इसमें एक तीसरी आँख न हो, जिसके नाते इसको त्र्यम्बक भी कहा जाता है। कठोरता के बिना मधुरता सुरक्षित नहीं रहती। ताप के बिना द्रव नहीं बनता।

हिन्दुस्तान एक विचित्र देश है, उसकी पहचान नदी से होती है या वनस्पति से। उसके देशकाल का बोध या तो नदी कराती है या वनस्पति कराती है। विशेष रूप से काल का बोध वनस्पति ही कराती है। उसके ऋतु-चक्र का अवतरण सबसे पहले वनस्पतिजगत पर ही होता है। हिन्दुस्तान का आदमी वनस्पति को अपना प्रतिरूप मानता है। सन्तान को वासुदेव वृक्ष के रूप में देखता है, कन्या को आँगन की तुलसी के रूप में देखता है। माँ को दूध भरे गाछ के रूप में देखता है। इसीलिए बिना वनस्पति के हिन्दुस्तान का कोई भी अनुष्ठान सम्पन्न नहीं होता। मनुष्य से मनुष्य का सम्बन्ध, वनस्पति से वनस्पति का सम्बन्ध, लता और वृक्ष का सम्बन्ध है। एक तरह से मनुष्य और वनस्पति की यात्रा समानान्तर होती है। पीढ़ी दर पीढ़ी मनुष्य का विस्तार वंश-वृक्ष बनता है।

वंश शब्द के ही दो अर्थ हैं – बाँस और पुत्र। कोई भी उत्सव होगा, हरे बाँस की पताका फहरायी जाएगी, केले के खम्बे लगेंगे, आम के पत्तों की वन्दनवार लगायी जाएगी। कलश पर पाँच वृक्षों के पल्लव रखे जाएँगे, उसके ऊपर नारियल रखा जाएगा। हरा नहीं मिलेगा तो सूखा या उसके भीतर का गोला रखा जाएगा। सुपारी की पार्वती बनेगी। दूब से हर देवता को हल्दी छिड़की जाएगी। हर चौक में कमल के पत्तों की अल्पना रची जाएगी। कोई भी पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन बिना पुष्पांजलि के पूरा नहीं होगा। कोई भी होम नारियल की पूर्ण आहुति के बिना सम्पन्न नहीं होग। किसी का भी अभिनन्दन करना हो, पान-सुपारी, हल्दी, दूव, नारियल थाल में ज़रूर सजेंगे। कोई भी मांगलिक मण्डप बनेगा तो पलाश के पत्तों से बनेगा। हिन्दुस्तान का कोई भी गाँव अगर दूर से पहचाना जा सकता है तो अमराई, बसवारी, महुआबारी, सिसवानी, ताड़-खजूरों की पंक्ति, केले की पंक्ति, नारियल की पंक्ति, पाकड़ की पंक्ति या तमालराजि की क्षितिज रेखा से ही पहचाना जाता है।

गाँव के नाम तक पेड़ों पर होते हैं – पिपरा, बरगदवा, पकड़ी, फुलवरिया, अमोना, जम्बुई, तरकुलवा, खजुराहो, सिसवा, बेलपार, इमलिया, बाँसगाँव, कटहरवा। नदी से जनपद की इकाई का बोध होता है – गंगापार, जमुनापार, सरयूपार, दशाण और वनस्पति से गाँव का। फल से मनुष्य का। नदी प्रवाह-धर्मिता और निरन्तरता के कारण हमारे सम्पूर्ण जीवन के समानान्तर है। वनस्पति जड़ों से खींचकर रस लेते रहने के कारण निरन्तर उससे नये होने के कारण, अवस्थान्तर होने के लिए तैयार होने के कारण, दूसरों के लिए छाया और फल देने के कारण जीवन की परार्थता और सफलता की प्रतिबिम्ब बनती है। वनस्पतियों में भी फलवाले पेड़ एक विशेष महत्व रखते हैं हमारे सांस्कृतिक जीवन में। उनमें भी विशेष रूप से वे फल जो गौध के पौध फलते हैं, जैसे आम, केला और नारियल, सुपारी। ये पेड़ हमारी समष्टि-चेतना के प्रतीक हैं। एक देह से अनेक होने की फलवत्ता इनमें दिखाई पड़ती है और अनेक होकर भी एक ही पहचान रखने की अन्विति भी इनमें दिखाई देती है। इन सबका अलग-अलग स्वाद है, रस है। पर नारियल की बात अलग है। वह सम्पूर्ण जीवन है, एक कठोर आचरण में मधुर रस संहित रूप से संचित करने वाला जीवन है।

जो लोकगीत मैंने पहले उद्धृत किया उसका यही तो अभिप्राय है कि तुम सम्पूर्ण जीवन जियो, कठोर भी बनो, मधुर भी बनो। बिना कठोर हुए, बिना कर्तव्य-परायण हुए करुणा कहाँ से आएगी। निरी करूणा भी किस काम की, यदि उसमें चारुता और मंजुता न हो। चारुता के लिए मृदु और कठोर का सन्तुलन चाहिए और मंजुता के लिए ताप की पकाई चाहिए। यह जीवन केवल अपने खाने-पीने की वस्तु नहीं है। यह उपभोक्ता नहीं है। यह उपभोग्य है। यही उसका सौभाग्य है। सौभाग्य से वंचित भोग अमंगल है, निरर्थक है। साहित्य में कई बार प्रश्नात्मक अभिप्राय दुहराया जाता है:

कवन बने फरेला नरियर, कवन बने केसर हे।
सखिया कवन बन चुएला गुलाब त चुनरिया रँगाइब हे।

सखि, किस वन में नारियल फलता है, किस वन में केसर फूलती है, किस वन में गुलाब खिलता है, किस रंग से मैं चुनरी रँगाऊँगी ?

उत्तर मिलता है :

बाबा बने फरेला नरियर, भैया बने केसर हे।
सखिया सैंया बने चुएला गुलाब त चुनरिया रँगाइब हे।

पिता के वन में नारियल फलता है, भाई के वन में केसर फूलती है, प्रिय के वन में गुलाब खिलता है। गुलाब के रंग से चुनरी रँगाऊंगी। पर चुनरी तो सब कुछ नहीं, छाया भी तो कुछ है और गहरी जड़ों से ऊपर तक खिंचकर आया हुआ संचित रस भी तो कुछ है। पिता का वन ऐसा ही वन है, वह नारियल का वन है, ऊपर बड़ा संयत और कठोर, भीतर से आर्द्र। ऐसा स्नेह पिता का होता है जो रंग भी होता है, रस और गन्ध भी होता है माथे पर लगता है तो माथा दमकता है और महकता भी है। प्रिय का प्यार एक गहरा रंग होता है। वह पहचान बनता है सौभाग्य का। यहाँ उल्लेखनीय है कि लोक साहित्य में जिससे पोषण मिलता है वह नारियल है, वह पिता है, वह दाय है, वह विरासत है। जिस पर सपने पलते हैं वह भाई का स्नेह है और मन जिससे रँगा होता है, वह प्रिय का प्यार है गुलाबी, पर काँटों से बिंधा हुआ।

नारियल को पिता के प्यार से जोड़ने के पीछे लोक-चेतना की गहरी जीवन दृष्टि है जो अनुशासन को महत्त्व देती है, अनुशासित जीवन वात्सल्य को महत्व देता है। नारियल को पूर्णाहुति के रूप में अर्पित करने का यह अभिप्राय है कि अनुशासन में संधा पर भीतर रस की उत्कण्ठा से दूसरों को सुख देने की कामना से भरा हो, तभी जीवन है, पूर्ण जीवन है, उसी को अर्पित करके अनुष्ठान पूर्ण होता है। बिना आत्मसंयम की दीक्षा के कोई भी स्नेह, कोई भी प्यार पूर्ण नहीं होता है।

कुछ लोकगीतों में नारियल सन्तान का प्रतीक है। विशेष रूप में स्वप्न में नारियल देखने का अभिप्राय पुत्र-जन्म की सम्भावना का संकेत देता है। नारियल का फल यहाँ भी जीवन की सम्पन्नता का ही एक बिम्ब है। उसी प्रकार सुपारी का फल स्वप्न में देखना पुत्री के जन्म का संकेत देता है। एक दूसरे गीत में श्वसुर का आश्रय स्त्री के लिए नारियल वन के आश्रय के सदृश वर्णित मिलता है, यहाँ श्वसुर और पिता में तादात्म्य दिखाना प्रायोजित है। बिना मुखर उद्घोषणा किये जो किसी के लिए अपना होता है जीवन का वास्तविक पोषण है, वही पितृभाव है।

नारियल का एक उपयोग देवी या देवता के स्थान पर फोड़ने में होता है, फोड़ने में ऐसी कुशलता होनी चाहिए कि रस छलककर पूरा का पूरा देवता के चरणों पर पड़े, कहीं अन्यत्र नहीं। यह फोड़ना आसान नहीं होता। न यही आसान होता है कि अपने जीवन को उद्भिन्न करे कि जीवन का समस्त रस आराध्य मूल्यों के लिए अर्पित होकर निश्शेष हो जाए। कब किसका ठीक तरह से लक्ष्य सधता है, नारियल फूटता है तो प्राय: रस इधर-उधर बिखर जाता है। जीवन उत्सर्ग होता है और वह जीवन छोटे मूल्यों पर उत्सर्ग हो जाता है। न तो नारियल फोड़ना मूल्य है, न उत्सर्ग अपने आप में मूल्य है। मूल्य यह पहचानने में है और उस पहचान को एकाग्र रूप से साधने में है कि उत्सर्ग चरम मूल्य के लिए हो रहा है, रस केवल देवी के चरणों को सींच रहा है।

वैसे तो सभी नारियल चढ़ा देते हैं। पुजारी सभी के नारियल फोड़-फोड़कर कुछ टुकड़े प्रसाद में देता है, किन्तु यह पूजा अधूरी पूजा है। अपने हाथों फोड़ना और सधे हाथों फोड़ना और अर्पित रस की बची हुई रस की एक बूँद पी जाना सार्थक पूजा है। उत्सर्ग को प्रसाद बना लेना सार्थक उत्सर्ग है।

सम्मानित व्यक्ति को, अपने जमाता को नारियल की भेंट दी जाती है तो उसके पीछे भी यही अभिप्राय है कि तुम हमारे जीवन में अन्तर्निहित समूची श्रद्धा भावना ले जाओ। यह नारियल भाव-बन्धन है, केवल इसकी जटाएँ ही रस्सी

बनकर बड़ी–बड़ी नावों को किनारे नहीं बाँधतीं, ये श्रद्धा को भी श्रद्धेय से बाँधती हैं। अन्तर इतना है कि रस्सी तो नाव को किनारे से बाँधती है और श्रद्धा सन्तरणशील मनुष्य को मँझधार से बाँधती है, श्रद्धा से आबद्ध कभी भी किनारे की अपेक्षा नहीं रखता। वह सदैव गतिशील रहता है, वह बहता नहीं है, बहता रहता है।

यह सब जब मैं आज सोचता हूँ तो बचपन की स्मृति का सूखा नारियल एकदम हरा हो जाता है। वही एक पेड़ बन जाता है, पेड़ नहीं वन बन जाता है। इस नारियल–वन के माध्यम से हिमालय की तलहटी में सागर की लहरों की ध्वनि सुनने को मिलने लगती है। गंगा के ऊपरी मैदान में उसके समुद्र मिलन की सफलता गुनगुनाने लगती है। उत्तर भारत तब दक्षिण भारत हो जाता है। तब कोई यह पूछना नहीं चाहता कि नारियल वैदिक है या अवैदिक, पौराणिक है या तान्त्रिक, आर्य है या द्रविड़? क्योंकि नारियल वन एक समग्र जातीय चेतना का रस बड़े यत्न से सँजोये हुए है, बड़े चौड़े घने पत्तों से नीचे सँजोये हुए है, और बड़े कड़े छिलके के भीतर उस रस को सँजोये हुए है। नारियल का रस सदा ही व्यंग्य है, वह रस हमारी व्यंजना प्रधान वाणी का प्रसाद है, वह अर्पित महाजातीय बोध का परिपाक है। वह निरन्तर तप की साधना से प्राप्त जीवन की मृदुता है, मधुरता है। इसीलिए वह परम मंगल है।

अभ्यास

बोध प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेखक के अनुसार अनुष्ठान के मांगलिक द्रव्यों की सूची में कौन सी चीज है, जो अवश्य रखी जाती है?
2. नारियल कहाँ का वृक्ष है ?
3. नारियल का फल कैसा होता है ?
4. वंश शब्द के क्या अर्थ हैं ?
5. भारवि के काव्य की प्रशंसा में मल्लिनाथ की उक्ति क्या है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. तामिलनाडु में लेखक को क्या–क्या देखने को मिला ?
2. नारियल को पिता के प्यार से जोड़ने के पीछे जो दृष्टि है वह क्या है और क्यों ?
3. नारियल के भाव बन्धन से लेखक का क्या तात्पर्य है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. **निम्नलिखित गद्य खण्डों की संदर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए –**
   - अ. इसमें वह कठोरता नहीं जो ताप सह सके, जो इसमें अनेक प्रकार की कुत्सित दृष्टियों को झेलने के लिए अभेद्य कवच न हो साथ ही उसमें तीसरी आँख न हो।
   - ब. कठोरता के बिना मधुरता सुरक्षित नहीं रहती। ताप के बिना द्रव नहीं बनता।
   - स. ऋतुचक्र का अवतरण सबसे पहले वनस्पति जगत पर ही होता है।
2. 'नारियल' विषय पर संक्षिप्त आलेख लिखिए।
3. 'पिता' की तुलना नारियल के किस प्रकृति विशेष से की है और क्यों ?

भाषा अध्ययन

1. **निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखिए –**

   सारथकता, रितु, रिणीयों, मधूर
2. **निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी मानक रूप लिखिए :**

   पिपरा, इमलिया

3. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए -**

सिंचन, तपन, भोग, गाँव, मधुर

4. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

वनस्पति, मधुरता, पीढ़ी-दर-पीढ़ी, वंश वृक्ष अभिनन्दन

आप जानते है -

ध्वनियों के मेल से बने सार्थक वर्ण समूह को शब्द कहते हैं।

- सामान्यतः शब्द भेद-उत्पत्ति और रचना के आधार पर किए जाते हैं।
- उत्पत्ति के आधार पर तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्द।
- रचना के आधार पर रूढ़, यौगिक और योगरूढ़

और भी जानिए -

शब्दों अथवा वर्णों के मेल से नए शब्द बनाने की प्रक्रिया को शब्द रचना कहते हैं।

- रचना के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं -
- रूढ़ शब्द वर्ग - 1. नाक, कान, राजा, काला, पीला, लड़का आदि
- यौगिक शब्द वर्ग - 2. रेलगाड़ी, चारपाई, दूधवाला आदि
- योग रूढ़ शब्द वर्ग - 3. पंकज, दशानन, लम्बोदर, पीताम्बर आदि

यहाँ- वर्ग 1. में जो शब्द हैं यदि उनके खण्ड करें, जैसे नाक ना और क तो खण्ड अर्थ हीन है।

वर्ग 2. रेलगाड़ी, रेल और गाड़ी दो सार्थक शब्दों से बना है।

वर्ग 3. से पकंज शब्द पंक - ज प्रत्यय के योग से बना है, जिसका अर्थ है कीचड़ में जन्मा हुआ लेकिन यह शब्द 'कमल' के लिए प्रयुक्त है।

जिन शब्दों के खण्ड सार्थक न हो, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं, यथा वर्ग 1 के शब्द।

- ऐसे शब्द जो दो शब्दों के मेल से बनते हैं एवं जिनके खण्ड सार्थक होते हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं। वर्ग 2 के शब्द।
- वे शब्द जो यौगिक होते हैं, पर अर्थ के विचार से अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी परम्परा से विशेष अर्थ के परिचायक हैं, योग रूढ़ शब्द कहलाते हैं यथा वर्ग 3 के शब्द।

5. **निम्नलिखित शब्दों में रूढ़ यौगिक और योगरूढ़ शब्द अलग-अलग कीजिए -**

नववधू, उद्यान-विज्ञानी, विरूप, विश्व, मंत्र, लता, हिमालय

योग्यता विस्तार

1. वनस्पति, जंगल, झरना, गाँव आदि को इंगित करता चित्र बनाकर कक्षा में लगाइए ।
2. विभिन्न प्रदेशों की वनस्पतियों की जानकारी एवं उनकी पत्तियों को एकत्र कर फाईल बनाइए।
3. 'अनुशासन' का विद्यार्थी जीवन में महत्व शीर्षक से एक निबंध लिखकर शिक्षक को दिखाइए।

शब्दार्थ

विरूप - रूप रहित, रूखा सा, अनुष्ठान - किसी अच्छी इच्छा को लेकर किया जाने वाला व्रत / यज्ञ, सरस - रस सहित, कुत्सित दृष्टि - बुरी दृष्टि, त्र्यम्बक - शिवजी, कौतूहल - उत्सुकता आश्चर्य, जिज्ञासा, अनुराग - प्रेम